321hi20

20

किशोरावस्था

''अब तुम बड़े हो गये हो, छोटे बच्चों को खेलने दो और तुम आकर मेरी मदद करो''।

'बड़ों के बीच बैठने की आवश्यकता नहीं है, बाहर जाकर खेलो।''

क्या आपको याद है जब आपसे भी ऐसी बातें कही गयी होंगी। हाँ, ठीक है, हम उस समय की बात कर रहे हैं जब आप न बच्चे रह गये थे और न ही आपको बड़ा समझा जा रहा था। बाल्यावस्था और प्रौढ़ावस्था के बीच का समय किशोरावस्था कहलाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा दी गयी परिभाषा के अनुसार किशोर 10–19 वर्ष की आयु के बालक/बालिका होते हैं। इस अवधि के दौरान क्या होता है कि आप किसी भी अवस्था (बाल्यावस्था और प्रौढ़ावस्था) के नहीं रहते? इस अवस्था की कौन सी विशेषताएं हैं? इस अवधि में कौन सी कठिनाइयाँ व अच्छी बातें होती हैं? इस पाठ में हम किशोरावस्था की बात करेंगे और इस अवधि में जो भी परिवर्तन आते हैं उनके बारे में जानेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् आप निम्नलिखित कर सकेंगे:

- किशोरावस्था को परिभाषित;
- किशोरावस्था में लड़के तथा लड़कियों में होने वाले शारीरिक परिवर्तनों की व्याख्या;
- किशोरों के आत्मविश्वास पर यौन विकास के प्रभाव की चर्चा;
- किशोरों के विकास में अभिभावकों, हम उम्र बच्चों और स्कूल के प्रभाव के उदाहरण;
- किशोरों की भाषा संबंधी कौशलों की व्याख्या;
- किशोरों के संज्ञानात्मक विकास, जो बालकों से भिन्न है, की विवेचना;
- किशोरों के विकासात्मक कार्यों का सूचीकरण;
- किशोरों के विशेष गुणों और समस्याओं का उल्लेख।

20.1 किशोरावस्था की परिभाषा

आइये किशोरावस्था की परिभाषा देखें –

''किशोरावस्था, बाल्यावस्था और प्रौढ़ावस्था के बीच की अवधि है।''

एक लड़का या लड़की किशोरावस्था में एक बच्चे की भाँति प्रवेश करते हैं और स्त्री या पुरूष बनकर निकलते हैं, जिनसे समाज में परिपक्व भूमिका की आशा की जाती है। प्रत्येक व्यक्ति के लिये 11 से 18 वर्ष का समय बहुत ही महत्त्वपूर्ण होता है। इन वर्षों में तीव्र शारीरिक व यौन विकास होता है और परिपक्वता आती है।

यह कहना अति कठिन है कि किशोरावस्था कब प्रारंभ होती है। हालांकि यौवनारंभ किशोरावस्था का प्रारम्भ माना जाता है।

यौवनारंभ क्या है? आइये देखें! 11 या 12 वर्षों के आस–पास का समय यौवनारंभ है जो साधारणतया 2 वर्षों तक रहता है। इन वर्षों में शारीरिक विकास वेगपूर्वक होता है और यौवन के चिह्नों का उदय शुरू होता है। लड़कियों में यौवनारंभ का पहला संकेत मासिक धर्म और लड़कों में स्वप्न दोष (रात्रि स्राव) है।

किशोरावस्था में होने वाले शारीरिक परिवर्तन निम्न हैं–

लड़कियाँ	लड़के
(1) लड़कियों का कद 11 से 13½ वर्ष की आयु में लगभग 8 सेमी. तक बढ़ जाता है।	13 से 15 वर्ष की आयु में लड़के औसतन कद में लगभग 20 सेमी. बढ़ते हैं।
(2) शरीर को गोलाई प्रदान करने के लिये अधिक वसीय ऊतक व त्वचा के नीचे के ऊतक विकसित होते हैं।	मांसपेशियों का विकास होता है जिससे लड़कों को भारी शारीरिक श्रम करने में मदद मिलती है।
(3) कंधे छरहरे हो जाते हैं जबकि नितम्ब चौड़े व गोलाकार हो जाते हैं।	लड़कों के कंधे चौड़े व मज़बूत हो जाते हैं जबकि उनके नितम्ब पतले ही रहते हैं।
(4) बगलों व जांघ क्षेत्र में बालों की वृद्धि।	शरीर पर बाल काले और घुंघराले हो जाते हैं। लड़कों के भी बगलों और जांघों में बाल आ जाते हैं। चेहरे पर, होंठों के ऊपर व गालों पर भी बाल उग आते हैं।
(5) आवाज़ तीखी और वयस्कों जैसी हो जाती है।	आवाज़ में परिवर्तन होता है यानी वह तीखी व परिपक्व हो जाती है। ऐसा स्वर यंत्र के बढ़ जाने व स्वर ग्रंथियों के लम्बे हो जाने से होता है। गले में एडम्स एप्पल ग्रंथि ज्यादा स्पष्ट हो जाती है।

(6) स्तनों में उभार आने लगता है।	शिश्न के आकार में व द्धि होने लगती है।
(7) मासिक धर्म प्रारंभ हो जाता है, प्रारंभिक मासिक चक्र अनियमित व कष्टदायक हो सकते हैं।	शिश्न ग्रंथि की व द्धि के एक साल बाद साधारणतया स्वप्न दोष होने लगता है। यौवनारंभ के समय वीर्य में शुक्राणु नहीं होते।

यद्यपि लड़कों व लड़कियों के शारीरिक विकास की तुलना की जा सकती है परंतु फिर भी लड़कियां अपना वयस्क कद, वज़न और प्रजनन क्षमता लड़कों से दो वर्ष पहले ही प्राप्त कर लेती हैं।

आप पहले पढ़ चुके हैं कि किशोरावस्था में लड़के और लड़कियों की पोषण संबंधी आवश्यकताएं भिन्न–भिन्न होती हैं। इस संदर्भ में तालिका 5.5, पाठ 05 'आहार नियोजन' देखें।

पाठगत प्रश्न 20.1

1. सबसे उपयुक्त उत्तर चुनिए।

   (i) किशोरावस्था .... के बीच का समय है।

   (a) जन्म व बाल्यावस्था

   (b) बाल्यावस्था व प्रौढ़ावस्था

   (c) प्रौढ़ावस्था व वृद्धावस्था

   (d) बाल्यावस्था व वृद्धावस्था

   (ii) किशोरावस्था की शुरूआत व अन्त होता है–

   (a) 11 और 18 वर्ष के मध्य

   (b) 12 और 16 वर्ष के मध्य

   (c) 13 और 18 वर्ष के मध्य

   (d) 15 और 18 वर्ष के मध्य

   (iii) लड़कियों में यौवन का पहला चिह्न है–

   (a) जांघ क्षेत्र में बालों का उगना

   (b) स्तनों का उभार

   (c) मासिक धर्म की शुरूआत

   (d) स्वप्न दोष

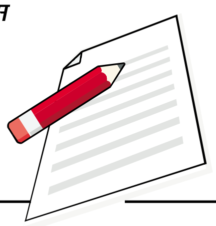

(iv) लड़कों में यौवन का पहला लक्षण है–

(a) चेहरे पर बालों का उगना

(b) स्वप्न दोष

(c) आवाज का भारीपन

(d) जांध क्षेत्र में बालों का उगना

2. दी गयी सूची में से किशोरावस्था में लड़कों/लड़कियों/दोनों में होने वाले परिवर्तनों पर सही का निशान (√) लगाइये।

	लड़का	लड़की
(1) अधिक वसीय ऊतक और शारीरिक अंगों में गोलाई	–	–
(2) छरहरे कंधे और चौड़े नितंब	–	–
(3) चौड़े और मजबूत कंधे और पतले नितंब	–	–
(4) शरीर पर काले व घुंघराले बाल	–	–
(5) तीखी व परिपक्व भारी आवाज	–	–
(6) मासिक धर्म का प्रारम्भ	–	–
(7) बाँहों और टांगों का विकास	–	–
(8) कद में वृद्धि	–	–

20.2 जल्दी या देर से परिपक्वता

कुछ किशोरों में ऊपर दिये गये परिवर्तन अन्य की तुलना में जल्दी होते हैं। इन परिवर्तनों के समय का किशोरों पर मनोवैज्ञानिक रूप से विशिष्ट प्रभाव पड़ता है।

सामान्यतया ऐसा देखा गया है कि जल्दी परिपक्व हुयी लड़कियां अपने शरीर में हो रहे परिवर्तनों से संकोच महसूस करती हैं कि यह सब उनमें क्यों हो रहा है? चूँकि वे परिपक्व दिखाई देती हैं, अतः वयस्क लोग उनसे जिम्मेदारीपूर्ण व्यवहार की अपेक्षा करते हैं। देर से परिपक्व होने वाली लड़कियां दिखने में छोटी लगती हैं और उनसे जिम्मेदारीपूर्ण व्यवहार की उतनी अपेक्षाएं नहीं की जातीं। अतः वे अधिक आश्वस्त रहती हैं, हालांकि लड़के उनकी ओर अधिक ध्यान नहीं देते।

जल्दी परिपक्व होने वाले लड़के लड़कियों की अपेक्षा अधिक आत्मविश्वासी होते हैं। अपने बलिष्ठ व विकसित शरीर के कारण वे नेता चुन लिये जाते हैं। वे आत्मसंतुष्ट होते हैं। साथ ही वयस्क लोग उनसे अपेक्षाएं भी अधिक करते हैं। देर से परिपक्व हुये लड़कों में हीन भावना आ जाती है और वे सोचते हैं कि कब वे अपने हमउम्र दोस्तों की भाँति बलवान और बलिष्ठ होंगे?

टिप्पणी

साधारणतया ये भावनाएं अस्थायी होती हैं और जैसे–जैसे किशोर बड़े होते जाते हैं, वे इन भावनाओं से भी मुक्ति पा लेते हैं। अभिभावकों को किशोर होते बच्चों से बातचीत करके उन्हें शारीरिक परिवर्तनों के विषय में बताना चाहिये। उन्हें अपने किशोर बच्चों को यौन शिक्षा देने का प्रयास भी करना चाहिये।

20.3 किशोरावस्था में सामाजिक संवेगात्मक विकास

किशोरावस्था के प्रारम्भिक वर्षों में बच्चों की मनःस्थिति में काफी उतार–चढ़ाव आते हैं। वे अत्यंत भावुक व चिड़चिड़े हो जाते हैं क्योंकि अपने अन्दर होने वाले परिवर्तनों के विषय में उन्हें समझ ही नहीं होती है। जैसे–जैसे समय बीतता जाता है, शरीर में हॉरमोन की गतिविधि कुछ स्थिर हो जाती है और इसके साथ ही उनकी उद्विग्नता भी खत्म हो जाती है।

सामाजिक रूप से वे हमेशा अपने हमउम्र साथियों के साथ रहना पसंद करते हैं। इस समूह की अपनी ही संस्कृति, मूल्य, भाषा, कपड़े पहनने का तरीका, संगीत तथा अन्य रूचि-अरूचि होती हैं। अपने समूह से एकाकारिता किशोरों का सबसे महत्त्वपूर्ण उद्देश्य होता है। यही कारण है किशोरों की मित्र मण्डली काफी बड़ी होती है। जो भी किशोर मित्र नहीं बना पाते वे अवसादग्रस्त हो जाते हैं, जिसके परिणाम घातक हो सकते हैं।

20.4 भाषा विकास

आप जानते हैं कि मध्य बाल्यावस्था तक बच्चे का शब्द ज्ञान लगभग 4000 से 5000 शब्दों तक का हो जाता है। पूर्व के शब्द ज्ञान के अधिकाधिक प्रयोग से भाषा धाराप्रवाह व जटिल हो जाती है। उनका शब्द भंडार बढ़ जाता है और वे उसका प्रयोग जटिल वाक्य बनाने में करते हैं। इससे धारा प्रवाह संप्रेक्षण में मदद मिलती है।

किशोरावस्था के भाषा विकास की एक प्रमुख विशेषता चालू, अपरिष्कृत भाषा व शब्दों के संक्षिप्त रूप का प्रयोग है। स्लैंग या चालू भाषा शब्दों के समूह या किसी विचार के लिये प्रयुक्त की जाती है। उदाहरण के लिये सुंदर लड़कियों के लिये 'माल' व अल्हड़ लड़कियों के लिये 'बिंदास' इसी प्रकार के चलते फिरते शब्द हैं। क्या आप भी कुछ इसी प्रकार के अपरिष्कृत चलते फिरते शब्दों के विषय में बता सकते हैं?

किशोरावस्था की भाषा विकास की एक अन्य विशेषता शब्दों के संक्षिप्त रूप का प्रयोग करना भी है जैसे कनाट प्लेस के लिये सी. पी. शब्द व ग्रेटर कैलाश के लिये जी. के. शब्द का प्रयोग। कई व्यक्ति तो इसी भाँति की भाषा का प्रयोग जीवन में काफी बाद तक भी करते रहते हैं।

20.5 संज्ञानात्मक विकास

किशोरावस्था से पहले बच्चे को वस्तुओं के संबंध को समझने के लिए वस्तुओं को देखना आवश्यक होता है लेकिन किशोरावस्था में पहुंच कर उनके संज्ञान में बदलाव आ जाता

है। किशोरों की सोच अमूर्त हो जाती है, वे घटना क्रम व परिस्थितियों की कल्पना कर सकते हैं। उदाहरण के लिये यदि उन्हें बताया जाये कि 'अ', 'ब' से बड़ा है और 'ब', 'स' से तब एक पंद्रह वर्षीय बच्चा निष्कर्ष निकाल सकता है कि 'अ' 'स' से भी बड़ा है। एक बच्चा जो अभी किशोर नहीं हुआ है वह निष्कर्ष निकालने से पहले अ, ब और स वस्तु को देखना चाहेगा।

किशोर साधारण तथ्यों के विपरीत विचारों को भी समझ सकते हैं। उदाहरण के लिये यदि एक किशोर को ''यदि हम सब उड़ पाते'' विषय का लाभ बताने को कहा जाये तब वह तुरंत ही इस प्रकार के उत्तरों की कल्पना करेगा कि, ''तब हमें वाहनों की आवश्यकता नहीं पड़ेगी''। क्या आप भी कुछ इस प्रकार के वाक्यों की कल्पना कर सकते हैं? इस प्रकार के तथ्यों के विपरीत विचारों के कारण किशोर उपमाओं को समझ सकते हैं। छुपे हुये व्यंग को समझ सकते हैं। इन क्षमताओं के कारण किशोर समस्याओं के सभी विकल्पों के विषय में विचार कर समाधान निकाल पाने में सक्षम होते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि किशोरों की विचारशक्ति अधिक परिपक्व व व्यवस्थित होती है।

20.6 किशोरावस्था में यौन शिक्षा की आवश्यकता

आप जानते हैं कि किशोरावस्था के अन्त तक किशोर यौन रूप से परिपक्व और वैवाहिक जीवन के लिये तैयार हो जाता है। इसीलिये किशोरों को यौन विकास के विषय में शिक्षित करने व इन परिवर्तनों में सामंजस्य बैठाने की आवश्यकता है। जैसी भी विचारधारा/प्रवृति वे इस विषय में बनाएंगे उसी पर उनका वयस्क यौन जीवन आधारित होगा। इन यौन प्रवृत्तियों को अपनाने में माता–पिता व स्कूल एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इस प्रकार की शिक्षा, 'प्रजनन स्वास्थ्य के लिए शिक्षा' भी कहलाती है।

इस समय किशोरों का यौन ज्ञान के प्रति रूझान बहुत ही स्वाभाविक है। उसके शरीर में गौण यौन लक्षणों का विकास व हॉरमोन की बढ़ती गतिविधि किशोर के मन में कई प्रश्न पैदा देती है। इन प्रश्नों के उत्तरों के लिये वह पुस्तकों व हम उम्र दोस्तों पर निर्भर होते हैं। परंतु दुर्भाग्यवश हम उम्र दोस्तों द्वारा दी गयी सूचना हमेशा सही नहीं होती बल्कि कई बार भ्रांतिपूर्ण भी होती है। इसी प्रकार इस विषय पर छपी किताबें उच्च कोटि की नहीं होतीं और यदि उपलब्ध होती हैं तो अत्यंत भ्रामक भी हो सकती हैं। इस तरह की सूचनाएं किशोरों को लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक पहुंचाती हैं। अतः माता–पिता बच्चों के यौन संबंधी प्रश्नों का उत्तर देने वाले वयस्क के रूप में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। अधिकांश माता–पिता बच्चों द्वारा पूछे गये प्रश्नों का उत्तर देने में असहजता महसूस करते हैं। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि माता–पिता बच्चों के साथ निकटतम संबंध बनाये रखें, ताकि बच्चे उनसे अपने कोई भी प्रश्न बेझिझक पूछ सकें व माता–पिता भी उन प्रश्नों के उत्तर संतोषप्रद ढंग से निसंकोच दे सकें।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 20.2

सबसे उपयुक्त उत्तर चुनकर अपने चुनाव के कारण भी लिखिये–

(1) शीघ्र वयस्क हुयी लड़कियाँ महसूस करती हैं–

(a) बेहतर व आश्वस्त

(b) संकुचित और अजीब

(c) संकुचित और आश्वस्त

क्योंकि ....

....

....

(2) निम्न में से किस की ओर लड़के आकर्षित नहीं होते?

(a) देर से वयस्क हुयी लड़कियां

(b) शीघ्र वयस्क हुयी लड़कियां

(c) दोनों ही उपर्युक्त

क्योंकि ....

....

....

(3) लड़कों में नेता चुने जाते हैं–

(a) देर से वयस्क हुये लड़के

(b) शीघ्र वयस्क हुये लड़के

(c) दोनों में कोई भी

क्योंकि ....

....

....

(4) किशोर बालक साधारणतया यौन सूचना के लिये .... पर निर्भर नहीं रहते–

(a) संगी साथी

(b) प्रकाशित सामग्री

(c) दादा दादी

क्योंकि ....

....

....

20.7 अभिभावकों की भूमिका

इस अवधि में किशोर/किशोरियाँ अपने माता पिता से स्वतन्त्र होना चाहते हैं परन्तु अपनी आवश्यकताओं के लिये उन्हें अभी भी माता पिता पर ही निर्भर रहना पड़ता है। वे यह नहीं चाहते कि उन्हें हर वक्त 'यह करो', 'वह मत करो' के विषय में बताया जाये। माता पिता चाहते हैं कि बच्चों पर उनका नियन्त्रण रहे, जबकि बच्चे स्वतन्त्र होना चाहते हैं। परिणामस्वरूप बच्चों व वयस्कों में एक प्रकार का द्वन्द्व प्रारंभ हो जाता है। यहाँ, माता पिता को सुनिश्चित करना होगा कि उन्हें अपने बच्चों पर कितना नियन्त्रण रखना है, कितनी स्वतन्त्रता देनी है और उन्हें किन क्षेत्रों में बच्चों की बात माननी चाहिये और कहाँ अपनी बात मनवानी चाहिये। संक्षेप में अभिभावकों को एक अनुकूल और सौहार्दपूर्ण अनुशासनात्मक तकनीक अपनानी चाहिये।

आइये माता–पिता द्वारा अपनाये गये अनुशासनात्मक तरीके और उनके प्रभावों की चर्चा करें–

(1) जो माता पिता अपने किशोर बालकों को अधिक स्वतन्त्रता देते हैं और उनके निर्णयों के प्रति दिलचस्पी व ज़िम्मेदारी का भाव दर्शाते हैं, वे बच्चों को अधिक आत्मनिर्भर और ज़िम्मेदार बनाने के लिये प्रोत्साहित करते हैं।

(2) जो माता–पिता सख्त और तानाशाही प्रकृति के होते हैं वे बच्चों को स्वंय निर्णय नहीं लेने देते। वे किशोरों की आत्मनिर्भर होने की क्षमता पर गंभीर रूप से रोक लगा देते हैं।

(3) दूसरी ओर यदि माता–पिता तटस्थ रहते हैं यानी किशोरों की समस्याओं को उन पर ही छोड़ देते हैं और उनसे से मेल जोल नहीं रखते, ऐसे किशोर तटस्थ मनोवृतियों वाले ही होते हैं।

जो माता–पिता अपने किशोर बच्चों को पारिवारिक मामलों में भाग लेने के लिये उत्साहित करते हैं, उनके निर्णयों का सम्मान करते हैं और उनकी गतिविधियों में दिलचस्पी लेते हैं, उनके बच्चे अत्यंत आत्मविश्वासी होते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि माता–पिता व बच्चों का संबंध आपसी प्रेम व आदर पर आधारित होना चाहिये। अपने माता–पिता के साथ अपने संबंधों की विवेचना कीजिये। क्या आप भी किन्हीं समस्याओं का सामना करते हैं? आप और आपके माता–पिता उनका सामना किस प्रकार करते हैं?

याद रखें, जिस प्रकार माता–पिता अपने बच्चों को समझने का प्रयास करते हैं, उसी प्रकार किशोर होते बच्चों को भी अपने माता–पिता का दृष्टिकोण समझ कर उनसे सलाह लेनी चाहिये क्योंकि माता-पिता का अनुभव वर्षों पुराना है।

टिप्पणी

20.8 हम-उम्रों की भूमिका

किशोरावस्था में खासकर 14 से 16 वर्ष की आयु में बच्चे माता–पिता से अधिक महत्त्व अपने हम-उम्रों को देते हैं। बदलते पारिवारिक परिवेश में, संयुक्त परिवारों (अभिभावक और दादा दादी) के टूटने से एकल परिवारों की वृद्धि होती है जोकि हम-उम्रों की भूमिका का महत्त्व बढ़ाती है। एकल परिवारों में किशोरों से उनकी समस्याओं पर बातचीत करने वाला कोई नहीं होता। ऐसा इसलिये होता है कि माता–पिता जीविकोपार्जन में व्यस्त रहते हैं और घर में कोई अन्य व्यक्ति नहीं होता है।

जैसा कि आप जानते हैं कि बचपन में हम-उम्रों का अत्यधिक प्रभाव हम पर पड़ता है और किशोरावस्था में भी हम-उम्र वही भूमिका निभाते हैं यानि वे भी हम उम्रों के साथ मेल जोल बढ़ाते हैं। अपनी उम्र के अनुसार कौशल व रूचि विकसित करते हैं व अपनी समस्याओं व भावनाओं की चर्चा भी करते हैं।

किशोरावस्था की अवधि में हम-उम्रों की मण्डली निम्न कारणों से महत्त्वपूर्ण बन जाती है–

(1) इस समय सभी बच्चे एक जैसे द्वन्द्वों एवं समस्याओं से घिरे रहते हैं।

(2) आमतौर पर किशोरों की धारणा है कि माता–पिता की अपेक्षा उनके दोस्त उन्हें अधिक अच्छी तरह समझते हैं।

(3) किशोरावस्था में ही बच्चा अपने विपरीत लिंगीय सदस्यों के साथ अंतः क्रिया सीखता है। इसके लिये अवसर हम-उम्रों की मण्डली ही प्रदान करती है।

(4) लगभग सभी किशोर समझते हैं कि अपने हम-उम्रों जैसे बात करना, चलना, बोलना, कपड़े पहनना और व्यवहार करना अत्यंत आवश्यक है। इसे 'मित्र संस्कृति' कहा जाता है। क्या आप कोई ऐसा उदाहरण दे सकते हैं? हाँ, एक उदाहरण तो यही हो सकता है कि लड़के एक कान में बाली पहनने लगे हैं। दूसरा उदाहरण बालों को या तो एकदम छोटा काटना अथवा बहुत लम्बे बढ़ाना है।

कई लोगों को मानना है कि 'मित्र संस्कृति' अपनाकर किशोर स्वयं को माता–पिता से भिन्न महसूस करते हैं। उनकी अपनी ही एक भाषा संस्कृति व कपड़े पहनने का अंदाज भी होता है।

यह आवश्यक है कि माता–पिता किशोर बच्चों को उनकी हम-उम्र मित्र मण्डली का सदस्य बनने दें परंतु बच्चों की गतिविधियों पर नजर भी रखें। क्योंकि कई बार ऐसी गतिविधियां अनजाने में असामाजिक भी हो सकती हैं। उदाहरण के लिये गुट बनाकर सड़कों पर होने वाली हिंसा में शामिल होना। हालॉकि यह आवश्यक नहीं है कि बच्चों के माता–पिता व मित्र एक दूसरे के विरोधी ही हों। कई बार मित्र मण्डली भी माता–पिता जैसे ही मूल्यों को बढ़ावा देती है, यदि उनका सामाजिक, आर्थिक व शैक्षिक स्तर किशोरों के अभिभावकों जैसा ही है।

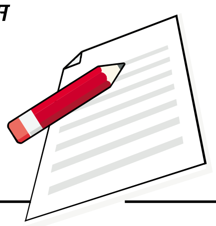

टिप्पणी

मित्रों का किशोरों पर हानिकारक प्रभाव भी पड़ सकता है। यदि किसी लड़के या लड़की द्वारा विपरीत लिंग के साथ संबंध कायम करते समय उसका उपहास किया जाये तो उसमें अत्यंत तनाव/चिन्ता पैदा हो सकती है। इसके अलावा कई बार किशोरों से उनके मित्र उनकी इच्छा के विरूद्ध कुछ कार्य करने के लिए दबाव डालते हैं जिनका उन्हें बाद में पछतावा हो सकता है, जैसे कि उन पर नशीली दवायें लेने के लिये या दुकानों से कोई वस्तु चुराने के लिये दबाब डालना।

20.9 विद्यालय व शिक्षकों की भूमिका

परिवार के अलावा, विद्यालय एक ऐसी महत्त्वपूर्ण संस्था है जिस पर किशोरों को अनेक सामाजिक व शैक्षणिक कौशलों को सिखाने की ज़िम्मेदारी है। कोई किशोर अपनी पढ़ाई में अव्वल है या नहीं यह काफी हद तक विद्यालय के वातावरण व शिक्षकों पर निर्भर करता है।

यदि स्कूल का अनुशासन बहुत सख्त नहीं है और वहाँ विद्यार्थी की भावनाओं का आदर किया जाता है तब विद्यार्थी को पढ़ाई करने में अत्यधिक आनंद आता है। यदि शिक्षक उचित रूप से प्रशिक्षित हैं, हँसमुख और उत्साही हैं और बच्चों की छिपी प्रतिभाओं को जागृत करें व उन्हें प्रोत्साहन दें, तो किशोर अपने बारे में सकारात्मक सोच बना सकते हैं।

दूसरी ओर अप्रशिक्षित, अयोग्य अध्यापक व छात्रों की अधिक संख्या, अधिक कार्यभार, सख्त पाठ्यक्रम या नियम बच्चों पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। इससे किशोरों को अपने प्रश्नों के उत्तर ठीक प्रकार से नहीं मिल पाते। परिणाम स्वरूप उनकी जिज्ञासा व पढ़ाई में रूचि कम हो जाती है और वह अच्छा परिणाम नहीं ला पाते। उनमें से कई को स्कूल तक छोड़ना पड़ सकता है।

माता–पिता के स्कूल में दिलचस्पी लेने की प्रवृति के कारण भी बच्चों की स्कूल व अध्यापकों के विषय में सोच प्रभावित होती है। माता–पिता की ही भाँति किशोर स्कूल व अध्यापकों का सम्मान करेंगे।

शैक्षणिक व सामाजिक कौशल देने की भूमिका के अतिरिक्त विद्यालय अभिभावकों तथा किशोरों के मध्य के 'पीढ़ी अन्तराल' को कम करने का दायित्व भी भली भाँति निभा सकते हैं। अध्यापक माता–पिता व किशोरों के मध्य एक केन्द्रीय भूमिका निभाते हैं और यदि अध्यापक किशोर छात्रों में लोकप्रिय है तो छात्र अपने माता–पिता से अधिक अपने अध्यापक की बात समझते हैं। अध्यापक इस अवसर का लाभ अभिभावकों के विचारों को उनके बच्चों तक मित्रवत् ढंग से पहुंचाने में मदद कर सकते हैं।

किशोरों के हम-उम्र दोस्त भी उनके शैक्षिक कार्यों में महत्त्वूपर्ण भूमिका निभा सकते हैं। चूँकि किशोरों का अपने हम-उम्र दोस्तों से संबंध बनाये रखना बहुत जरूरी होता है, अतः यदि उनके मित्र पढ़ाई पर अधिक ध्यान देने वाले हैं तो किशोर भी अपने मित्रों को देखकर परिश्रम करेगा ताकि वह अपने मित्रों के समूह का हिस्सा बना रहे।

पाठगत प्रश्न 20.3

1. कॉलम (I) के वक्तव्यों को कॉलम (II) के वक्तव्यों से मिलाकर वाक्य पूरा करें।

कॉलम (I)		कॉलम (I)	
(a)	जब माता पिता किशोरों को स्वतन्त्रता देते हैं और उनके क्रियाकलापों मे दिलचस्पी लेते हैं	(i)	किशोर आत्मनिर्भर नहीं बनेंगे।
(b)	जब माता–पिता अत्यंत सख्त व तानाशाह हों	(ii)	किशोर आत्मनिर्भर बनते हैं।
(c)	जब माता–पिता किशोरों को उनके अपने ऊपर ही छोड़ देते हैं	(iii)	किशोर आत्मनिर्भर व जिम्मेदार बनते हैं।
		(iv)	किशोर आत्मनिर्भर व तटस्थ बनते हैं।

2. निम्न को कम से कम दो उदाहरण देकर समझाइये। उदाहरण आपकी पाठ्य सामग्री से अतिरिक्त होने चाहियें –

1. हम-उम्र संस्कृति	2. हानिकारक हम-उम्र दबाव	3. सकारात्मक हम-उम्र प्रभाव
(a)	(b)	(c) ....
(a)	(b)	(c) ....

20.10 किशोरावस्था के विकासात्मक कार्य

अब तक हमने किशोरावस्था के विभिन्न क्षेत्रों में होने वाले विकास की चर्चा की है। इस विकास प्रक्रिया का प्रभाव बच्चों के भावनात्मक विकास पर पड़ता है। ये विकासात्मक कार्य कहलाते हैं। आइये इनकी सूची देखें –

(1) प्रथम महत्त्वपूर्ण कार्य अपने शारीरिक गठन को मानना व इसका प्रभावपूर्ण ढंग से प्रयोग करना है।

(2) अपनी उम्र के लड़के व लड़कियों के साथ परिपक्व संबध कायम करना।

(3) पुरूष व नारी सुलभ सामाजिक भूमिका निर्वहन के लिये तैयार होना यानि की समाज के जिम्मेदार महिला व पुरूष सदस्य की भूमिका निर्वाह करने की योग्यता विकसित करना।

(4) माता-पिता व अन्य वयस्कों से भावनात्मक स्वतन्त्रता प्राप्त करना।

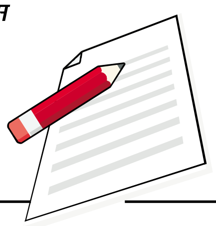

(5) सिद्धान्त या मूल्यों का विकास करना।

(6) व्यावसायिक जीवन की तैयारी करना।

(7) विवाह तथा गृहस्थ जीवन के लिये तैयार होना।

पाठगत प्रश्न 20.4

(1) किशोरों की भाषा की दो महत्त्वपूर्ण विशेषताएं बताइये।

....

....

(2) किशोरों के विचारों की दो मुख्य विशेषताएं लिखिये।

....

....

(3) किशोरों के किन्हीं तीन विकासात्मक कार्यों की विवेचना कीजिये।

....

....

(4) किशोरों की दो संवेगात्मक व दो सामाजिक विशेषताओं का वर्णन करिये।

संवेगात्मक <   सामाजिक <

20.11 किशोरावस्था की विशेषताएं

किशोरावस्था का व्यापक अध्ययन करने के बाद क्या आप किशोरों के कुछ उन व्यवहार व विशेषताओं के विषय में बता सकते हैं जो उन्हें वयस्कों व बच्चों से अलग करते हैं? आइये इनकी चर्चा करें।

- पहली विशेषता है किशोरों का अपने ही रूप रंग व शारीरिक गठन के विचारों में तल्लीन रहना। सभी किशोर समझते हैं कि उनमें हो रहे यह परिवर्तन अनोखे हैं और सबकी आँख उन पर है। कुछ मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, यह एक ऐसी सोच होती है मानो किशोर 'हर वक्त मंच पर खड़े हों।' सभी किशोर अपने रूप के प्रति चिंतित रहते हैं और कभी मुंहासों और कभी दाड़ी आने या न आने से चिंतित रहते हैं।
- सभी किशोर अपने 'हम-उम्रों की संस्कृति' अपनाना चाहते हैं। इस समूह की

बोलचाल की भाषा, चलने का ढंग व व्यवहार कुछ अलग होते हैं जो वयस्कों को अजीब लगता है।

- इस अवधि में किशोरों की अपने से उम्र में बड़े दूसरे लिंग के प्रति प्रेम की तीव्र भावना होती है। अपनी उम्र के विपरीत लिंगी किशोरों को काफी अपरिपक्व लगते हैं।
- किशोरावस्था की एक अन्य विशेषता है 'आदर्शवादिता'। किशोरों के कुछ ऐसे विचार होते हैं कि लोगों को बहुत अच्छा होना चाहिये और उन्हें किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिये। वे एक प्रकार के आदर्शवादी संसार में विश्वास करते हैं जहाँ हर चीज अच्छी, न्यायप्रद व स्वच्छ हो।
- कभी न कभी सभी किशोरों में विद्रोहात्मक विचार आते हैं। वे सोचते हैं कि अभिभावक व वयस्क उन्हें ठीक प्रकार से नहीं समझते और वे वयस्कों के विचारों से सहमत नहीं होते। उन्हें वह सब कुछ करने में आनंद आता है जिसे उनके अभिभावक पसंद नहीं करते। उदाहरण के लिये अलग प्रकार के वस्त्र पहनना, शरीर गुदवाना, और तेज संगीत सुनना आदि। लगभग सभी किशोर अपनी पीढ़ी व अभिभावकों के बीच एक 'पीढ़ी अंतराल' को महसूस करते हैं।
- सभी किशोर किसी न किसी समय अपनी 'मनः स्थिति में तीव्र उतार चढ़ाव' महसूस करते हैं। क्या आप जानते हैं ये उतार चढ़ाव क्या होते हैं? यदि ऐसा कुछ होता है जो किशोर को नापसंद हो तब वह निराश या हताश हो उठते हैं। उदाहरण के लिये यदि कोई मित्र उन्हें न तो टेलिफोन करता है और न मिलने आता है तो उनके हताश होने के लिये यही काफी बड़ा कारण है। क्या आपने भी कभी अपनी मनः स्थिति में उतार चढ़ाव महसूस किया है? आपने किस प्रकार अपनी खराब मनः स्थिति का सामना किया?

किशोर अभी भावनात्मक रूप से पूर्णतया परिपक्व नहीं होते। दूसरों की बातों से वे आसानी से प्रभावित हो जाते हैं। यदि कोई उनका विश्वास जीतने का प्रयास करता है तब उस व्यक्ति पर वह आसानी से विश्वास कर लेते हैं। ऐसा इसलिये होता है कि किशोर लोगों की मंशा की बजाय उनकी बातों पर अधिक विश्वास करते हैं।

किशोरों के विकास में एक महत्त्वपूर्ण कार्य है स्व–कल्पना का निर्माण। प्रश्न "मैं कौन हूँ" उन्हें अधिकतम समय परेशान करता रहता है। यदि किशोर स्वयं, व उनके आसपास वाले लोग विशेषतः उनके हम-उम्र उनके गुणों, शारीरिक गठन व व्यवहार से प्रसन्न हैं तो उनमें स्वयं के लिए सकारात्मक धारणांए उत्पन्न होती हैं। संज्ञानात्मक योग्यताओं के बढ़ने से वे अपने लिए स्वयं ही नियम बनाते हैं और इससे उनकी पहचान भी बनती है।

20.12 किशोरों की भी समस्यायें होती हैं

किशोरावस्था के दौरान तीव्र गति से शारीरिक परिवर्तन होते हैं। अन्य क्षेत्रों में भी विकास होता है। माता–पिता व अन्य वयस्कों की अपेक्षाएं भी बदल जाती हैं। इससे

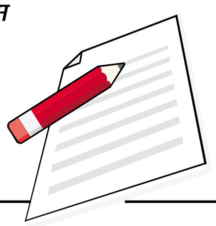

किशोर काफी भ्रमित हो जाते हैं। अपने माता–पिता व हम-उम्रों के सहयोग से कई किशोर इस अवधि से परिपक्व होकर निकलते हैं जबकि कुछ किशोरों के व्यवहार में विकार आ जाते हैं। आइये संक्षेप में इन समस्याओं के विषय में बातचीत करें।

(1) भोजन संबंधी परेशानी

कुछ शीघ्र परिपक्व किशोर सोचते हैं कि वे मोटे हो रहे हैं और वे अपेक्षित भोजन की मात्रा में कटौती करने लगते हैं। कुछ अन्य समझते हैं कि कोई उन्हें प्यार नहीं करता, अतः उनका ध्यान आकर्षित करने के लिये वे अत्यधिक मात्रा में खाने लगते हैं और मोटे होने लगते हैं। कुछ किशोर अत्यंत भावुक होते हैं और डाँटे जाने पर या तनाव की स्थिति में वे उल्टी करने लगते हैं।

(2) आत्मघाती प्रवृतियां

कई किशोर अपने मित्र समूह से दोस्ती करने में अक्षम होते हैं। वे अपने माता–पिता पर भी विश्वास नहीं करते। ऐसी स्थिति में वे स्वंय को बेहद अकेला महसूस करते हैं और सोचते हैं कि कोई उन्हें प्यार नहीं करता। दूसरों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिये या कई बार सच में उनमें आत्मघाती प्रवृति पनपने लगती है, जिससे वे स्वंय को ही खत्म कर देना चाहते हैं।

(3) मित्रों का दबाब

अपने मित्रों में स्वंय को बलिष्ठ प्रदर्शित करने के लिये किशोर कई बार मित्रों के दबाब में मदिरापान, धूम्रपान व नशीला दवाओं का सेवन करने लगते हैं। सामान्यतया ऐसी समस्याएं इसलिए आती हैं क्योंकि किशोर अत्यंत भावुक होते हैं और परिवार व मित्रों की जरा सी भी उपेक्षा को वे काफी गंभीरता से लेते हैं। यदि मित्र व माता–पिता समझदारी से काम लें तो ऐसी समस्याओं से आसनी से निपटा जा सकता है।

(4) व्यक्तिगत समस्यायें

किशोरों की अपने रूप रंग से संबंधित अनेक समस्यायें होती हैं। उनके अनुसार वे या तो बहुत मोटे होते हैं या पतले, या बहुत लम्बे होते हैं या बहुत छोटे। वे कभी अपनी नाक के आकार के लिये तो कभी अपने कपड़े पहनने के ढंग को लेकर चिंतित होते हैं।

(5) सामाजिक समस्यायें

किशोर पारिवारिक व सामाजिक उत्सवों में भाग लेना पसंद नहीं करते। वे विपरित लिंगी लोगों के साथ रहने में हिचकते हैं, कि कहीं उनका मजाक न बनाया जाये।

(6) शारीरिक समस्यायें

लड़के और लड़कियाँ दोनों के ही लिये शारीरिक समस्यायें काफी जटिल होती

हैं। लेकिन लड़कियों के लिये शारीरिक समस्याएं अधिक जटिल होती हैं। लड़कियाँ अपनी समस्यायें बताने में हिचकिचाती हैं। उन्हें पता नहीं होता कि अपने शरीर में होने वाले परिवर्तनों के बारे में सूचना कहाँ से प्राप्त करें। अपनी समस्याओं को लेकर किसी स्वास्थ्य अधिकारी से संपर्क करने में उन्हें भय व संकोच होता है। संभवतः स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं, विशेषकर प्रजनन स्वास्थ्य समस्याओं, के लिये उन्हें कोई शिक्षा नहीं दी जाती। धार्मिक रीति रिवाज़ और अंधविश्वास लड़कियों के लिए यौवनारंभ के समय, विशेषतः मासिक धर्म के समय, गलत व्यवहार प्रस्तावित करते हैं, जिसका लड़कियों पर बुरा मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है। किशोरों को उपयुक्त ज्ञान प्रदान करने की विशेष आवश्यकता है।

(7) किशोरावस्था में गर्भधारण

भारत में बाल–विवाह आम बात है। इसीलिये स्त्रियों में यौन गतिविधि छोटी उम्र में ही प्रांरम्भ हो जाती है। क्या आपको पता है कि भारत में विवाह करने की न्यूनतम आयु कानूनन तय है? लड़कों के लिये यह आयु 21 वर्ष व लड़कियों के लिये 18 वर्ष है। इस उम्र से पहले विवाह करना गैर कानूनी है।

भारत में किशोरों का विवाह शारीरिक परिपक्वता प्राप्त करने से काफी पहले ही कर दिया जाता है अतः किशोरों पर गर्भधारण व मातृत्व की जिम्मेदारी भी प्रजनन परिपक्वता से पहले ही आ पड़ती है। किशोरावस्था में गर्भधारण चाहे विवाह से पहले हो या बाद में, अक्सर अनियोजित होता है। और इसके गंभीर मानसिक व स्वास्थ्य संबंधी, सामाजिक व आर्थिक दुष्परिणाम होते हैं।

छोटी आयु में गर्भधारण से प्रजनन तंत्र को काफी क्षति होती है क्योंकि इस उम्र में प्रसव काफी कठिन होता है। किशोरी माँ के बच्चे अक्सर कमजोर होते हैं। वे या तो जन्म लेते ही या फिर शैशवावस्था में ही मर जाते हैं। छोटी अवस्था में ही गर्भधारण करने से परिवार भी बड़ा होता है जिससे जीवन की गुणवत्ता पर नकारात्मक असर पड़ता है। जल्दी माँ बनने से किशोरी पर मनोवैज्ञानिक दबाव पड़ता है और उसके शिक्षा पूरी करने या किसी व्यवसाय के लिए तैयारी करने की संभावना कम हो जाती है। बिन ब्याही को सामाजिक सहमति नहीं मिलती, और किशोरी को शर्म, अपराध बोध, ग्लानि और भय का अहसास भी होता है। इन सब झंझटों से बचने के लिये वे किसी अप्रशिक्षित व्यक्ति के पास चली जाती हैं, जो गर्भ गिराने के लिये अनुपयुक्त तरीके अपनाते हैं।

यदि आप या आपके मित्र के सामने ऐसी परिस्थिति आती है तो अपने परिवार के किसी बड़े से सहायता लेने में हिचकिए मत। इस प्रकार के अवांछित गर्भ को रोकने के तरीकों को जानना भी लाभप्रद होता है। ऐसे मामलों की सलाह आपके अड़ोस–पड़ोस के किसी प्रशिक्षित स्वास्थ्यकर्ता या नर्सिंग कार्यकर्ता द्वारा ली जा सकती है।

पाठगत प्रश्न 20.5

1. नीचे कुछ विशेषताओं की सूची दी गयी है। आप इनमें से किशोरावस्था की विशेषताओं को चुनें –
   (a) 'मंचासीन' होने की भावना
   (b) आत्म केन्द्रित
   (c) अजनबी के प्रति व्यग्रता
   (d) मित्र संस्कृति
   (e) आकर्षण
   (f) मूर्त चिन्तन
   (g) सिद्धान्तवाद
   (h) विद्रोही
   (i) कार्य नीतियां
   (j) पीढ़ी अंतराल
   (k) भाई बहनों में प्रतिस्पर्धा
   (l) अमूर्त चिन्तन
   (m) मनःस्थिति में उतार–चढ़ाव
   (n) परिपक्व सोच
   (o) शीघ्र प्रभावित होना

2. प्रत्येक वक्तव्य के अंत में दिये गये चार उत्तरों में से सबसे सही उत्तर चुनिये।
   (i) किशोरों में भोजन संबंधी विकार संबंधित हैं ....
      (a) कम खाना, अधिक खाना और उल्टी करना
      (b) तीव्र विकास के कारण उदर का पिचकना
      (c) मित्रों का दबाव
      (d) मनःस्थिति में उतार-चढ़ाव
   (ii) किशोरों में आत्मघाती प्रवृति विकसित होती है ....
      (a) भोजन संबंधी विकार के कारण
      (b) मित्रों के दबाव के कारण
      (c) शारीरिक समस्याओं के कारण
      (d) अकेलेपन के कारण
   (iii) किशोरों की प्रजनन स्वास्थ्य की शिक्षा की आवश्यकता होती है क्योंकि ....
      (a) वे तेजी से बढ़ रहे हैं
      (b) उन्हें अपने शारीरिक गठन को स्वीकारने की आवश्यकता है।

टिप्पणी

(c) उन्हें लिंगीय भूमिका निभाने की तैयारी करनी है।
(d) उन्हें विवाह व पारिवारिक जीवन के लिये तैयार होना है।

(iv) किशोर अपने अभिभावकों के प्रति विद्रोही हो जाते हैं क्योंकि वे समझते हैं कि
(a) वयस्क लोग उन पर विश्वास नहीं करते
(b) वयस्क लोग उन्हें समझते नहीं
(c) उन पर मित्रों का दबाव रहता है
(d) वे बड़े हो गये हैं

3. शीघ्र विवाह के कारण होने वाली दो स्वास्थ्यगत हानियाँ व दो आर्थिक हानियों के विषय में लिखिये–

स्वास्थ्य को हानि	आर्थिक हानि
....	....
....	....
....	....

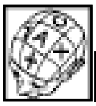

आपने क्या सीखा

किशोरावस्था

- शारीरिक परिवर्तन और यौन परिपक्वता
  1. कद बढ़ना
  2. पेशीय व ऊतकों का विकास
  3. बालों की व द्धि
  4. आवाज में परिवर्तन
  5. यौन परिवर्तन
- सामाजिक व भावनात्मक विकास
  - माता-पिता, मित्रों, स्कूल और शिक्षकों की भूमिका
- भाषा और संज्ञानात्मक विकास
  1. जटिल व धारा प्रवाह भाषा
  2. जटिल तथा अमूर्त चिंतन
  3. कुछ काल्पनिक विचारों को भी समझ सकते हैं
- किशोरों की समस्यायें
  1. भोजन संबंधी विकार
  2. आत्मघाती प्रव ति
  3. मित्रों का दबाव
  4. व्यक्तिगत समस्याएँ
  5. सामाजिक समस्यायें
  6. शारीरिक समस्यायें
  7. किशोरावस्था में गर्भधारण

पाठान्त प्रश्न

1. 'किशोरावस्था' को अपनी भाषा में समझाइए।
2. किशोरावस्था में लड़के व लड़कियों में होने वाले शारीरिक परिवर्तनों की तालिका बनाइये।
3. किशोरावस्था में शीघ्र और देर से हुई परिपक्वता के परिणामों की विवेचना कीजिये।
4. माता–पिता अपने बच्चों को यौन शिक्षा देने में किस प्रकार की भूमिका निभा सकते हैं?
5. किशोरावस्था में अभिभावकों द्वारा प्रयोग किए जाने वाले अनुशासन के तरीकों का उल्लेख कीजिए। आपके अनुसार कौनसी तकनीक उचित है?
6. किशोरावस्था में मित्रों तथा हम-उम्रों की भूमिका की विवेचना कीजिये।
7. ''विद्यालय में किशोरों की शिक्षा में अच्छे परिणामों के लिये विद्यालय का अच्छा वातावरण व प्रशिक्षित अध्यापकों का होना अत्यंत आवश्यक है'' क्या आप इस कथन से सहमत हैं? उदाहरण देकर अपने उत्तर की पुष्टि कीजिये।
8. किशोरावस्था में होने वाले संज्ञानात्मक विकास की क्या विशेषताएं हैं? विवेचना कीजिये।
9. किशोरावस्था के महत्त्वपूर्ण विकासात्मक कार्यों का सूचीकरण कीजिये।
10. किशोरावस्था की विशेषताओं व समस्याओं का उल्लेख कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

20.1 1. (1) (b) (2) (a) (3) (c) (4) (b)

2. लड़के – 3, 4, 5

लड़कियां – 1, 2, 6

20.2 1. (b) क्योंकि वे समझ नहीं पाते कि उनके साथ क्या हो रहा है और चूँकि वे अभी छोटे ही होते हैं लेकिन उनसे अधिक जिम्मेदाराना व्यवहार की अपेक्षा की जाती है।

2. (a) क्योंकि वे परिपक्व नहीं दिखते और उनसे बच्चों की तरह व्यवहार किया जाता है।

3. (b) क्योंकि उनका शारीरिक गठन अच्छा होता है और वे बलिष्ठ भी होते हैं।

4. (c) क्योंकि किशोर ऐसी सूचनाएं अपने दादा–दादी से लेने में झिझकते हैं।

20.3 1. (i) (d) (ii) (d) (iii) (d)

2. i) (a) पुरानी व बदरंग जीन्स पहनना

(b) फैशन की अंधी नकल

ii) (a) धूम्रपान व मदिरापान

(b) स्कूल व काम से भागना

iii) (a) परीक्षा में अच्छा परिणाम पाना

(b) एक दूसरे को नये कौशल सीखने के लिये उत्साहित करना

20.4 (1) चालू भाषा, संक्षिप्त रूप

(2) मूर्त, अमूर्त

(3) पाठ से पढ़िये

(4) भावनात्मक
- चिड़चिड़ा
- आत्मघाती प्रवृति

सामाजिक
- मित्र समूह का सदस्य बनने की चाहत
- मित्र समूह के नियमों में रहने की चाहत

20.5 1. a, d, c, g, h, j, l, m, o

2. (i) a (ii) d (iii) d (iv) b